32 PAGES ANSWER BOOK

विषय Subject : HINDI

विषय कोड Subject Code : 051

परीक्षा की दिनांक / Date of Exam : 020323

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : HINDI

प्रश्न पत्र का सेट
Set of the Question paper : B

गोले भरने हेतु उदाहरण :-
सही तरीका :-
● ○ ○ ○
गलत तरीका :-
⊗ ⊘ ○ ◐ ◉ ○

नोट :-
इस शीट को भरने के पूर्व इस पृष्ठ के पीछे दिए गए उदाहरण को देखें।

ID NO. 6417894
SUB. 051 - HINDI
pk: 6
Bag. 40511394

केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठी

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल ... अंकों में

ST-16 A4

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जा ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग स है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर परीक्षा क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रलगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
Deepak Verma 9460146 शा उ मा वि	ममता रहान EMR-DVS-51

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

पूर्ण अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 1 का उत्तर
सही विकल्प

(i) (अ) दत्ताजी राव के यहाँ।

(ii) (ब) नाभिक।

(iii) (स) शब्दालंकार।

(iv) (अ) चार कालों में।

(v) (द) कपड़े पहनाती हैं।

(vi) (स) पैसे की।

प्रश्न क्र. 2 का उत्तर
रिक्त स्थान

(i) लेखक

(ii) नौ वर्ष की उम्र

(iii) भूषण

(iv) कागज के प्रन्ने से

(v) बिड़ला मंदिर

(vi) सरल वाक्य

(vii) मात्रिक

प्रश्न क्र. 3 का उत्तर

सही जोड़ी

'क'	'ख'
(i) मस्ती का सन्देश	(ब) हरिवंशराय बच्चन
(ii) चौपाई छन्द	(अ) 16 मात्राएँ
(iii) चित्रकार	(द) चितेरा
(iv) सम्पादकीय पृष्ठ	(स) अखबार की अपनी आवाज
(v) हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग	(ई) भक्तिकाल
(vi) छायावाद के प्रवर्तक कवि	(इ) जयशंकर प्रसाद

BSE

प्रश्न क्र. 4 का उत्तर
एक शब्द / एक वाक्य

(1) "पहलवान लुट्टन सिंह की ढोलक की आवाज" मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती रहती है।

प्रश्न क्र.

(ii) 'चन्द्रगुप्त' जयशंकर प्रसाद की नाट्य रचना है।

(iii) कवि ने स्लेट पर लाल खड़िया चाक मलने की बात की है।

(iv) सोरठा छन्द मात्राओं की दृष्टि से सोरठा छन्द का उल्टा होता है।

(v) ऐसा लघु वाक्यांश जिसके प्रयोग से भाषा में सौंदर्य उत्पन्न होता है उसे "मुहावरे" कहते हैं।

(vi) रेडियो नाटकों में पात्रों की पहचान "संवाद एवं ध्वनि" के माध्यम से होती है।

(vii) सिन्धु-घाटी सभ्यता में "अंगूर एवं खजूर" फल उगाए जाते हैं।

प्रश्न क्र. 5 का उत्तर
सत्य/असत्य

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) सत्य

BSE
www.oddyi

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(v) सत्य

(vi) असत्य

प्रश्न क्र. 6 का उत्तर (अथवा)

लक्षणा शब्द शक्ति

उ.6 परिभाषा = जिस शब्द-शक्ति से शब्द के प्रचलित अर्थ का बोध न होते हुए उससे संबंधित अन्य अर्थ का बोध हो, वहाँ पर लक्षणा शब्द शक्ति होती है।

उदाहरण = 1. राजा सूरजमल तो शेर थे।

2. गोपाल तो उल्लू है।

प्रश्न. क्र. 7 का उत्तर
तकनीकी शब्द

उ.7 परिभाषा = किसी विषय से संबंधित ऐसे शब्द जिनका प्रयोग मुख्य रूप से उस विषय की चर्चा में किये जाते हैं, उन्हें तकनीकी शब्द कहते हैं।

उदाहरण = वेग, त्वरण।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 8 का उत्तर

शुद्ध कीजिए

शुद्ध वाक्य -

उ. (१) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।

(2) जंगल में शेर दहाड़ने लगा।

प्रश्न क्र. 9 का उत्तर

उ.9 कवि ने अपने खेत में "शब्द रूपी बीज" बोया था।

प्रश्न क्र. 10 का उत्तर

उ.10 संसार में कष्टों को सहते हुए भी खुशी और मस्ती का माहौल पैदा किया जा सकता है। संसार में दुःख-सुख, लाभ-हानि का अपना महत्व होता। एक के अभाव में दूसरे की अनुभूति नही कर सकते है। हमें कर्त्तव्य-पथ में मिलने वाले कष्टों से नही घबराना चाहिए व मुस्कुराते हुए कष्टों का सामना करना चाहिए, जिससे कष्टों का प्रभाव कम हो जाता है

उत्तर

प्रश्न क्र. 11 का उत्तर

उ.11 जेब के भरे होने और मन के खाली होने पर व्यक्ति को हर वस्तु अपनी आवश्यकता की लगती है। वह बाजार की चकाचौंध में फँस जाता है और उसे लगता है कि मैं यह भी खरीद लूँ, वह भी खरीद लूँ और व

प्रश्न क्र.

वह "पर्चेजिंग पावर" के गर्व में अनावश्यक कई वस्तुएँ खरीद लेता है।

प्रश्न क्र. 12 का उत्तर (अथवा)

उ.12 महादेवी वर्मा ने स्वयं व भक्तिन के मध्य "सेवक-स्वामी" के सम्बन्ध को नकारा है। महादेवी वर्मा कहती है कि जिस प्रकार आँगन में ~~आने~~ वाली धूप-छाया का अपना अस्तित्व होता है, ठीक उसी प्रकार भक्तिन का भी एक स्वतंत्र अस्तित्व है। धूप-छाया हमारे गुलाम नहीं होते, ठीक उसी प्रकार भक्तिन को भी सेविका नहीं कहा जा सकता है।

प्रश्न क्र. 13 का उत्तर

उ.13 लेखक के पिता ने आनन्द को पाठशाला भेजते समय निम्न शर्त रखी -

1) सुबह से खेत पर बस्ता लेकर आना होगा।

2) खेत का कार्य पूर्ण होने पर पाठशाला जाना होगा।

3) पाठशाला से आते ही बस्ता घर पर रखकर खेत आना होगा और एक घंटे ढोर चराना होगा।

4) जिस दिन खेत पर कार्य अधिक हो, उस दिन पाठशाला नहीं जाना होगा।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 14 का उत्तर (अथवा)

उ.14 फिल्म और रंगमंच पर दृश्यों को निम्न की सहायता से प्रभावशील बनाया जाता है -

1. मंच-सज्जा
2. वस्त्र-सज्जा
3. अभिनेता के चेहरे की भाव-भंगिमा।

प्रश्न क्र. 15 का उत्तर (अथवा)

संदेह अलंकार

B
S
E

उ.15 परिभाषा = किसी विशेष गुण, रंग, रूप आदि विशेषताओं की समानता के कारण किसी वस्तु को देखकर यह निश्चय न हो कि यह वही वस्तु है, वहाँ पर संदेह अलंकार होता है। इसमें अन्त तक संशय बना रहता है।

उदाहरण =

1) "रस्सी है या साँप।"
2) "सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है, कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।"

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 16 का उत्तर (अथवा)

संवाद

अनिल = और मित्र! कैसे हो?

मोहन = मैं ठीक हूँ, तुम बताओ।

अनिल = मैं भी ठीक हूँ। आज शाम को क्रिकेट खेलने चलेंगे।

मोहन = लेकिन खेलेंगे कहाँ?

अनिल = हमारे विद्यालय के खेल के मैदान में।

मोहन = अच्छा, तो इसके लिए तो प्राचार्य महोदय से अनुमति लेनी होगी।

अनिल = मैंने अनुमति ले ली है।

मोहन = तो क्रिकेट खेलने के लिए कहाँ मिलेंगे?

अनिल = तुम मेरे यहाँ चार बजे आ जाना, दोनों साथ में चलेंगे।

मोहन = चलो ठीक है, फिर मिलते हैं शाम को चार बजे।

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 17 का उत्तर (अथवा)
अपठित गद्यांश

उत्तर =(क)

उ(क) गद्यांश का उचित शीर्षक है - "हँसने का महत्व"

उत्तर =(ख)

उ(ख) नीरस जीवन को भी "हास्य-व्यंग्य" सुखद बना देता है।

B
S
E

उत्तर = (ग)
सार

उ(ग) "हास्य - व्यंग्य" नीरस जीवन को भी सुखद बना देता है। यह बहुत प्रभावशाली है जो संक्रामक छूत के रोग की तरह फैल जाती है। जीवन में हँसना अति आवश्यक है, यह हमारे कष्टों को कम करता है। संघर्ष, तनाव, घुटन भरी जिन्दगी में हँसना आवश्यक है। इसके अभा में जीवन दुर्भर हो जाता है।

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 18 का उत्तर (अथवा)
काव्यगत परिचय
तुलसीदास

(i) दो रचनाएँ

गीतावली, रामचरितमानस।

(ii) भावपक्ष - कलापक्ष

B S E

• भावपक्ष

तुलसीदासजी रामभक्ति शाखा के मुख्य कवि हैं। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण काव्य-यात्रा में राम के चरित्र का वर्णन किया है। वे श्रीराम में शील, सौन्दर्य एवं शक्ति जैसे तीन गुणों को देखते थे। उन्होंने समाज-सुधार, समाजोत्थान एवं लोक-मंगल के लिये रचनाएँ की। उन्होंने शृंगार एवं वीर रस का भरपूर प्रयोग किया है।

• कलापक्ष

तुलसीदासजी का अवधि व ब्रज दोनों भाषा पर समान अधिकार था। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती सभी कवियों की शैली को अपनाया। उन्होंने रस, छन्द एवं अलंकार का सुन्दर योग किया है। उन्होंने विषय व शिल्प दोनों ही दृष्टि से साहित्य को पुष्ट किया है।

(iii) साहित्य में स्थान

तुलसीदासजी जननायक थे। वे लोक कवि थे। मानव जीवन का

प्रश्न क्र.

सर्वांगीण चित्रण तुलसीदासजी ही कर पाए हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं से हिन्दी साहित्य को अभूतपूर्व सेवा प्रदान की है। आपका योगदान हिन्दी साहित्य कभी नहीं भूल पाएगा।

प्रश्न क्र. 17 का उत्तर
साहित्यिक परिचय
फणीश्वर नाथ रेणु

(i) दो रचनाएँ

संवदिया, मैला-आँचल

(ii) भाषा - शैली

• भाषा

फणीश्वरनाथ रेणु ने शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली को अपनाया है। उनकी रचनाओं के पात्र ग्रामीण एवं अशिक्षित लोग हैं जो गाँव में बोले जाने वाले विकृत शब्दों का प्रयोग करते हैं। रेणुजी ने तत्सम, तद्भव, उर्दू, अंग्रेजी आदि शब्दों का प्रयोग किया है। उनकी भाषा पात्रानुकूल थी। उनकी रचनाओं में मुहावरे व लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है।

• शैली

फणीश्वरनाथ रेणु की शैली विषयानुरूप थी। उन्होंने निबन्ध

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

पूर्ण अंक

प्रश्न क्र.

में विचारात्मक शैली एवं वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया। आपने गवेषणात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली, हास्य-व्यंगात्मक शैली का प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में वर्णनात्मक स्थलों पर छोटे वाक्य देखने को मिलते है।

(iii) साहित्य में स्थान

फणीश्वरनाथ रेणु ने हिन्दी साहित्य में "आँचलिक" विधा को जन्म दिया है। आपने आपकी रचनाओं से हिन्दी-साहित्य को समृद्ध किया है। आपको "पद्मश्री" पुरस्कार से नवाजा गया है। हिन्दी साहित्य आपका सदैव ऋणी रहेगा।

प्रश्न क्र. 20 का उत्तर (अथवा)

पत्र

प्रश्न क्र.

उ. 20

पत्र

09, सागरमल मार्ग,
खाचरौद, म.प्र.

दिनाँक = 02-03-2023

पूज्य पिताजी !
सादर प्रणाम,

मैं यहाँ कुशल मंगल हूँ। आशा करती हूँ आप भी ठीक होंगे। मुझे अभी-अभी आपका पत्र प्राप्त हुआ जिसमे आप मेरी परीक्षा के बारे में पूछ रहे थे।

मेरी परीक्षा 10 मार्च 2023 से प्रारम्भ हो रही है। मैंने अभी तक लगभग सभी विषय पढ़ लिये है। मुझे कुछ अध्यायों में कठिनाई आ रही हैं, मैं निरन्तर सम्बन्धित अध्यापकगणों से मार्गदर्शन ले रही हूँ एवं पूर्ण हो चुके अध्यायों का पुनरावलोकन कर रही हूँ ताकि मेरे प्रतिशत बढ़ सके। मुझे आशा है कि मैं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होऊँगी।

माताजी को प्रणाम कहना व छोटू को प्यार।

आपकी पुत्री
अ.ब.स.

B S E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 21 का उत्तर

निबन्ध

(iii) विद्यार्थी और अनुशासन

रूपरेखा – प्रस्तावना
1. अनुशासन का अर्थ
2. अनुशासन का महत्व
3. विद्यार्थी और अनुशासन
4. अनुशासनविहीनता के दुष्परिणाम
5. उपसंहार
6.

BSE

"अपनी इच्छाओं पर अनुशासन ही चरित्र का आधार है।"

1. प्रस्तावना = यदि हम अपने चारों ओर दृष्टि दौडाएं तो पाएँगे कि प्रकृति नियमों से बँधी हुई है। सूर्य समयपर उदय होता है व समय पर अस्त होता है। इसे ही अनुशसन कहते है और यही मानव जीवन का आधार है। अनुशासा ही मानव को पशु से भिन्न करती है।

2. अनुशासन का अर्थ = "अनुशासन" दो शब्दों से मिलकर बना है - "अनु + शासन"। अनु का अर्थ है "पीछे" व शासन का अर्थ है - "नियम" अर्थात् नियम का पालन करना ही अनुशासन कहलाता है। यह नियम स्वयं व्यक्ति परिवार, ~~समाज~~ समाज या राष्ट्र द्वारा निर्धारित किए जाते है किन्तु अनुशासन आन्तरिक होता है, बाह्य नही

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

3. अनुशासन का महत्व = अनुशासन का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है। वही व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है, जिसके जीवन में अनुशासन है। अनुशासित व्यक्ति ही समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति न केवल स्वयं का बल्कि परिवार, समाज व राष्ट्र की भी उन्नति करता है।

4. विद्यार्थी और अनुशासन = विद्यार्थी और अनुशासन का घनिष्ठ सम्बन्ध है। वही विद्यार्थी जीवन में सफलता को प्राप्त करता है, जिसका जीवन नियमित है अर्थात् समय पर उठना, नियमित रूप से पढ़ना, गृहकार्य करना, समय पर सोना आदि। अनुशासित विद्यार्थी शिक्षकों के प्रिय होते हैं और यही समाज और राष्ट्र की उन्नति मे सहायक होते हैं।

B
S
E

5. अनुशासनविहीनता के दुष्परिणाम = अनुशासनविहीनता के कई दुष्परिणाम हैं। अनुशासनविहीन जीवन पशु के भाँति उच्छृंखल बन जाता है। ऐसे व्यक्ति अपना जीवन पतन की ओर ले जाते हैं। अनुशासनविहीन व्यक्ति विश्वस-पात्र नहीं होता, नहीं इसे जीवन में सम्मान मिलता है।

6. उपसंहार = कहा जाता है कि–

"विद्यार्थी का आभूषण : अनुशासन"

विद्यार्थी को अपने जीवन में अनुशासन का पालन अवश्य करना चाहिए तभी वह उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त हो सकता है। अनुशासन के लिए आवश्यक है कि

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

विद्यार्थी अपनी इच्छाओं को नियन्त्रित करें। अंततः सभी को अनुशासन का महत्व समझना चाहिए एवं अनुशासित जीवन व्यतीत करना चाहिए।

प्रश्न क्र. 22 का उत्तर
संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या

1) संदर्भ = प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक "आरोह" के पाठ "पतंग" से ली गई है। इस कविता के कवि "आलोक धन्वा" है।

B

S 2) प्रसंग = प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने शरद ऋतु के आगमन पर मौसम परिवर्तन को दर्शाया है।

E

3) व्याख्या = आलोक धन्वा कहते है कि घनघोर बारिश की वर्षा ऋतु समाप्त हो गई है और शरद ऋतु का आगमन हुआ है। शरद ऋतु का प्रातःकाल का सूरज खरगोश की आँख के समान लालिमा युक्त है। शरद ऋतु के आने पर बच्चों में ताजगी उत्साह एवं जोश का संचार हुआ है। वे अपनी चमकीली साइकिल को चलाते हुए जोर-जोर से घंटी बजाते हैं। वे घंटी बजाते हुए सभी मित्रों को आमन्त्रित करते है और पतंग उड़ाते।

4) विशेष = 1) शरद ऋतु का सुन्दर वर्णन किया गया है।
2) "खरगोश की आँखों जैसा लाल सबेरा" में उपमालंकार है।
3) "जोर-जोर" में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

16 A4

4) भाषा सरल, सहज एवं खड़ी बोली की है।

प्रश्न क्र. 23 का उत्तर (अथवा)
संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या

1) संदर्भ = प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक "आरोह" के पाठ "बाजार दर्शन" से लिया गया है। स निबन्ध के निबन्धकार "जैनेन्द्र कुमार" है।

2) प्रसंग = प्रस्तुत पंक्तियाँ पंक्तियों में लेखक ने पैसे को पावर कहा है।

BSE

3) व्याख्या = जैनेन्द्र कुमार कहते है कि पैसों में पावर होता है। पैसों द्वारा हम भौतिक सुख-सुविधाओं को प्राप्त कर सकते है। किन्तु किसी के पास कितना पैसा, यह देखने के लिए उसका बैंक-बेलेंस देखना पड़ता है लेकिन लेखक कहते है कि ऐसे पैसों का क्या काम जो दिखता न हो? अर्थात् पैसों का प्रदर्शन आवश्यक है। माल-पानी, जायदाद, मकान आदि तो नही देखते हुए भी दिखते है अतः पैसों को दिखाने के लिए इन वस्तुओं का होना आवश्यक है। लेखक कहते है कि पैसे की क्रय शक्ति में ही पैसों का पावर निहित है

4) विशेष = 1) अंग्रेजी व उर्दू शब्दों का प्रयोग किया गया है।
2) पैसों के पावर का वर्णन किया गया है।

MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,M

प्रश्न क्र.

3) "बैंक-हिसाब, माल-असबाब, मकान-कोठे" में सामासिक पदों का प्रयोग किया गया है।

4) भाषा सरल, सहज खड़ी बोली की है।

9.1mm x 3

B
S
E